## म्यूचुअल फंड्स ने कंपनी को अलग-अलग स्कीम्स में ₹2,000 करोड़ का निवेश भुनाने से रोका

# म्यूचुअल फंड्स ने भी दिया DLF को धक्का

[ ईटी ब्यूरो | मुंबई ]

देश की सबसे बड़ी रियल एस्टेट डिवेलपर की मुश्किलें घरेलू म्यूचुअल फंड्स ने और बढ़ा दी हैं। डीएलएफ ने उनकी कई स्कीम्स में 2,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का इनवेस्टमेंट किया है। कंपनी यह निवेश भुनाना चाहती है, लेकिन फंड्स उसे ऐसा नहीं करने दे रहे हैं।

डीएलएफ ने यह बात बुधवार को सिक्योरिटीज एपेलेट ट्रिब्यूनल में हो रही सुनवाई के दौरान बताई। कंपनी ने सेबी के हालिया आदेश को सैट के सामने चुनौती दी है। सेबी ने 2007 में आए आईपीओ में इनवेस्टर्स से जानकारी छिपाने के मामले में डीएलएफ और इसके प्रमोटर्स को तीन साल के लिए शेयर मार्केट में एंट्री करने से रोक दिया था। इस आदेश के चलते कंपनी के शेयरों में बड़ी गिरावट आई है।

सेबी के आदेश के तुरंत बाद एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया ने रेगुलेटर से इस बात पर स्पष्टीकरण देने का अनुरोध किया था कि डीएलएफ अगर निवेश भुनाना चाहे तो उन्हें क्या करना चाहिए। सेबी ने हालांकि इस सवाल का अभी कोई जवाब नहीं दिया है। एक बड़े म्यूचुअल फंड के सीईओ ने बताया, 'हमने डीएलएफ के निवेश भुनाने के बारे में मार्केट रेगुलेटर से क्लैरिफिकेशन देने का अनुरोध किया है। सेबी ने अभी जवाब नहीं दिया है।' उन्होंने कहा, 'सेबी से जवाब मिलने तक हम यूनिट्स भुनाने की इजाजत नहीं दे सकते हैं।'

▶ स्टॉक मार्केट में बढ़ा कंजम्प्शन थीम पर दांव पेज 4

हालांकि, सूत्रों के अनुसार सेबी ने फंड हाउसेज को अनौपचारिक रूप से कहा है कि वे इस बारे में अपने लीगल एडवाइजर्स की राय लें। 31 मार्च तक डीएलएफ के पास इंडियाबुल्स म्यूचुअल फंड में 200 करोड़ रुपये की यूनिट्स, आईसीआईसीआई

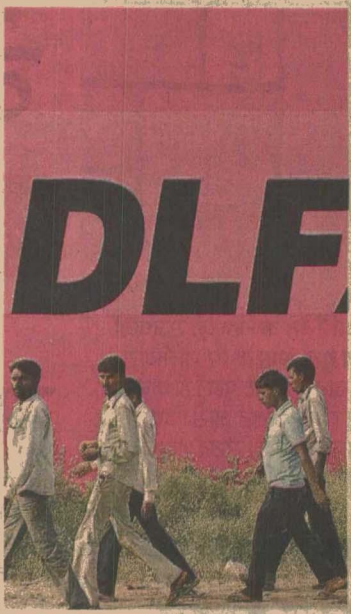


प्रूडेंशियल में 175 करोड़ की और डीएसपी ब्लैकरॉक तथा एचडीएफसी म्यूचुअल फंड में 17-17 करोड़ रुपये की यूनिट्स थीं। डीएलएफ ने बिड़ला सन लाइफ म्यूचुअल, जेपी मॉर्गन और रिलायंस म्यूचुअल में भी निवेश किया है। एक फंड हाउस के सीनियर ऑफिशियल ने बताया कि सेबी ने 14 जनवरी 2011 के एक आदेश में अनिल अंबानी और उनके ग्रुप के चार अधिकारियों को जब सेकेंडरी मार्केट में ट्रांजैक्शन करने से रोका था, तो उस आदेश के दायरे से म्यूचुअल फंड्स, प्राइमरी इश्यूज, बायबैक्स और ओपन ऑफर्स को बाहर रखा गया था। उन्होंने कहा कि डीएलएफ वाले आदेश में हालांकि सेबी ने म्यूचुअल फंड रिडेम्पशंस के बारे में कुछ नहीं कहा है।

# स्टॉक मार्केट में बढ़ा कंजम्शन थीम पर दांव

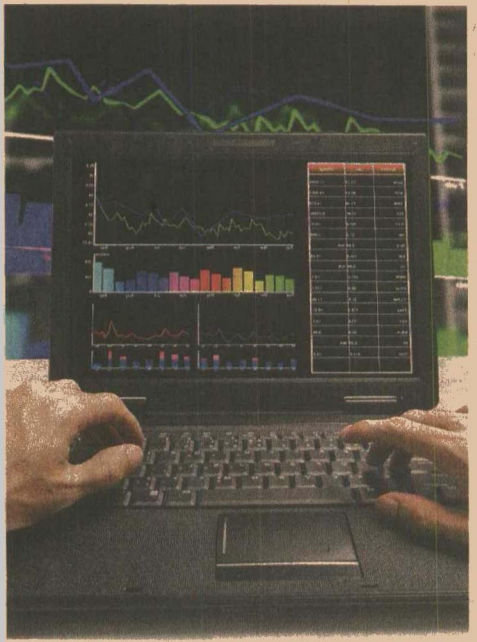

## कंजम्शन स्टोरी पर फोकस करने वाली म्यूचुअल फंड स्कीमों में निवेश से हो सकता है फायदा

[ निखिल वालावलकर | मुंबई ]

दलाल स्ट्रीट संवत 2071 में प्रवेश कर रहा है। ऐसे में जानकार इनवेस्टर्स विनिंग स्टॉक्स चुनने में बिजी हैं। ये स्टॉक ऐसे हैं, जिन्हें अगले कुछ वर्षों में कंजम्शन में रिवाइवल का फायदा मिल सकता है। इन सबके बीच रिटेल इनवेस्टर शेयर सेलेक्शन को लेकर कन्फ्यूज हैं। ऐसे में उनके लिए कंजम्शन स्टोरी का फायदा पाने वाली कंपनियों पर दांव लगाने वाली म्यूचुअल फंड स्कीमों में इनवेस्टमेंट बेहतर साबित हो सकता है।

डोमेस्टिक म्यूचुअल फंड्स में मिराए, बिड़ला सन लाइफ, रिलायंस और UTI के पास कंजम्शन पर फोकस वाली MF स्कीमें हैं। फंड ट्रैकिंग फर्म वैल्यू रिसर्च के डेटा के मुताबिक, इन चार MF स्कीमों ने पिछले तीन साल में एवरेज 22 पर्सेंट रिटर्न दिया है। इस दौरान बेंचमार्क निफ्टी सिर्फ 16 पर्सेंट मजबूत हुआ है।

रिलायंस कैपिटल एसेट मैनेजमेंट के CIO-इक्विटी सुनील सिंघानिया के मुताबिक, 'इंडिया के आबादी के पैटर्न के हिसाब से यहां कंजम्शन थीम खूब चलेगी। पिछले चार साल में रूरल कंजम्शन थीम खूब चली, अब अर्बन कंजम्शन जोर पकड़ रहा है।' कंजम्शन थीम में एफएमसीजी, ऑटोमोबाइल, हाउसिंग, पेंट्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और सीमेंट सेक्टर्स शामिल हैं। ज्यादातर इनवेस्टर्स को लगता है कि कंजम्शन थीम का मतलब सिर्फ FMCG है, लेकिन लाइफस्टाइल में चेंज से इस थीम का दायरा बढ़ गया है।

### 4 MF स्कीम का बेजोड़ रिटर्न

- **डोमेस्टिक म्यूचुअल** फंड्स में मिराए, बिड़ला सन लाइफ, रिलायंस और UTI के पास कंजम्शन पर फोकस वाली MF स्कीमें हैं
- **इन चार** MF स्कीमों ने पिछले तीन साल में एवरेज 22 पर्सेंट रिटर्न दिया है। इस दौरान बेंचमार्क निफ्टी सिर्फ 16 पर्सेंट मजबूत हुआ है

मिराए एसेट ग्लोबल इनवेस्टमेंट्स (इंडिया) के चीफ इनवेस्टमेंट ऑफिसर गोपाल अग्रवाल ने कहा, 'लोगों के नॉन-ब्रांडेड सामान के बजाय ब्रांडेड सामान चुनकर वैल्यू चेन में ऊपर चढ़ने का प्रोसेस तेज हो गया है। यह कंजम्शन स्ट्रक्चरल स्टोरी है जिसका व्यापक रूप लॉन्ग टर्म में दिखेगा और यह बेहतर रिटर्न दे सकता है।'

स्पेसिफिक सेक्टर से उलट वैल्यूएशन सस्ता या महंगा होने पर कंजम्शन फंड्स में एक दूसरे सेक्टर में शिफ्ट होने का दम है। सेंट्रम इंडिया के CIO कुंज बंसल के मुताबिक, 'कंजम्शन व्यापक थीम है। इसमें लग्जरी गुड्स और किचन अप्लायंसेज से लेकर इनकी खरीदारी के लिए फंड मुहैया कराने वाली कंपनियां तक शामिल हैं। इनकम लेवल बढ़ने पर ऑटोमोबाइल, एंटरटेनमेंट, पेंट्स के कंज्यूमर्स की संख्या भी बढ़ती है।'

इनकम लेवल बढ़ने पर कंज्यूमर्स प्रीमियम सर्विसेज के लिए एक्सट्रा पेमेंट करने को तैयार होते हैं। इससे मल्टीप्लेक्स, ब्रांडेड जूलरी और वेकेशन सर्विसेज को खासा फायदा होता है।

ICICIडायरेक्टडॉटकॉम के हेड ऑफ रिसर्च पंकज पांडेय ने कहा, 'हाल के वर्षों में कुछ इलाकों में उन चीजों पर खर्च बढ़ा है, जिन्हें नहीं करने से रोजमर्रा का काम नहीं रुकता है और यह ट्रेंड बना रह सकता है। इसको देखते हुए ये थीम इनवेस्टमेंट का मौका साबित हो सकती हैं।'

कंजम्शन स्टोरी पर फोकस करने वाली म्यूचुअल फंड स्कीमों पर नजर डालने से यह साफ हो जाता है कि उनके पोर्टफोलियो को इस तरह तैयार किया गया है कि उन्हें उपभोग में तेज उछाल का पूरा फायदा मिले। इन स्कीमों का पसंदीदा इनवेस्टमेंट टारगेट फाइनेंशियल सर्विसेज होता है। उनके पोर्टफोलियो में सबसे ज्यादा इनका एलोकेशन होता है।